इकाई - 2 Date - 02.06.2020

Topic :- प्राथमिक स्तर पर गणित के संदर्भ मे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

अवधारणा →

Ans → NCF-2005 परंपरागत आकलन पद्धति के बजाय नयी तथा सार्थक मूल्यांकन पद्धति अपनाने की सिफारिश करता है ताकि बच्चो के सीखने का समग्र रूप से मूल्यांकन किया जा सकें और बच्चे बिना डरे मूल्यांकन की प्रक्रिया मे भाग ले सकें। आर.टी.ई अधिनियम 2009 ने बच्चो के निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के साथ-साथ बच्चो के सतत और व्यापक मूल्यांकन की रूपरेखा भी प्रस्तुत की है जिसे की हम पहले ही चर्चा कर चुके है कि प्रचलित रूढ़िगत मूल्यांकन पद्धति बच्चो के ज्ञान का समग्र रूप से आकलन करने मे असफल रहता है प्रचलित पद्धति मे वर्ष मे एक या सत्र के अंत मे ढाई या तीन घंटे के परीक्षा के माध्यम से बच्चो के वर्षभर मे अर्जित ज्ञान का आकलन उचित रूप से करना संभव नही है अतः यदि बच्चे के अर्जित ज्ञान और अधिगम अनुभव का समग्र मूल्यांकन करना हो तो वह सतत और व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपना कर लिया जा सकता है। बच्चो के सीखे हुए ज्ञान का मूल्यांकन कक्षा-कक्ष के विभिन्न क्रियाकलापो, विद्यालय के सह-शैक्षणिक गतिविधियो, खेल के माध्यम से, शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया मे बच्चों के सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करके सतत एवं व्यापक रूप से किया जा सकता है। इन सभी परिस्थितियो मे बच्चे के योग्यता कौशल, व्यवहार, रुचि अभिवृति, गणितीय मनोवृति व गणितीकरण की जाँच सतत रूप से शिक्षक कर सकते है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया सीखने-सीखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है तथा यह दोनो प्रक्रियाएं साथ-साथ चलती है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य है विद्यार्थियो को सीखने-सीखाने, ज्ञान की संरचना करने, अवधारणाओ तथा विधियो की समझ बनाने व अपने तरीके से उपयोग करके अपने अधिगम-अनुभव को प्रभावी व स्थायी बनाना है। जाहिर है बच्चो को गणितीय समस्या समाधान व समस्या निर्माण के लिए विभिन्न परिस्थितियो मे कई अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। हमे विद्यार्थियो को परिचय उन तमाम विधियो से करवाना है जिसमें वे स्वयं के उत्तर निर्मित करने की सामर्थ्य विकसित कर सकें। तथा दुसरे बच्चो के उत्तर को देखकर उसका विश्लेषण करने और समझने का प्रयास भी कर सकें। उनका गलतियाँ करने के प्रति निडर होना और अपनी समझ को व्यक्त करने का आत्मविश्वास होना जरूरी है।

Scanned with CamScan